**International Journal of Management, IT & Engineering**
Vol. 7 Issue 4, April 2017,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gage as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

# मध्यकालीन भारत का वैचारिक अध्ययन

डॉ. प्रतिभा सिंह*

पूर्व मध्यकाल में भारत की सांस्क ृतिक चेतना में विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति दिखाई देती थी। स्थानीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर शिक्षा, कला, संगीत रीति परम्परा, साहित्य, दर्शन आदि के क्षेत्र में नयी–नयी प्रवृत्तियों का जन्म एवं विकास दृष्टिगोचर होता है, शिल्प कार्य को हीन मानने की प्रवृत्ति ने शिल्पकला के विकास को प्रभावित किया। धर्म के क्षेत्र मे एक से अधिक देवताओं की स ंयुक्त प्रतिमाओं का निर्माण, समन्वय की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। सामान्यतः मध्यकालीन भारत का अर्थ १००० इस्वी से लेकर १८५७ तक के भारत तथा उसके पड़ोसी देशों जो सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक दृ ष्टि से उसके अंग रहे हैं, से लगाया जाता है।

**मुस्लिम शासन का आगाज**

फारस पर अरबी तथा तुर्कों के विजय के बाद इन शासकों का ध्यान भारत विजय की ओर ११वीं सदी में गया। इसके पहले छिटपुट रूप से कुछ मुस्लिम शासक उत्तर भारत के कुछ इलाकों को जीत या राज कर चुके थे पर इनका प्रभुत्व तथा शासनकाल अधिक नहीं रहा था।

**दिल्ली सल्तनत**

१२वीं सदी के अंत तक भारत पर तुर्क, अफगान तथा फारसी आक्रमण बहुत तेज हो गए थे। महमूद गजनवी के बारंबार आक्रमण ने दिल्ली सल्तनत को हिला कर रख दिया। ११९२ इस्वी में तराईन के युद्ध में दिल्ली का शासक पृथ्वीराज चौहान पराजित हुआ और इसके बाद दिल्ली की सत्ता पर पश्चिमी आक्रांताओं का कब्जा हो गया। हालाँकि महमूद पृथ्वी राज को हराकर वापस लौट गया पर उसके गुलामों (दास) ने दिल्ली की सत्ता पर राज किया और आगे यही दिल्ली सल्तनत की नींव साबित हुई।

**गुलाम वंश**

इस्लाम में समानता की संकल्प्पना और मुस्लिम परम्पराएं दक्षिण एशिया के इतिहास में अपने चरम बिन्दु पर पहुंच गई, जब गुलामों ने सुल्तान का दर्जा हासिल किया। गुलाम राजवंश ने लगभग 84 वर्षों तक इस उप महाद्वीप पर शासन किया। यह प्रथम मुस्लिम राजवंश था जिसने भारत पर शासन किया। मोहम्मद गोरी का एक गुलाम कुतुब उद दीन ऐबक अपने मालिक की मृत्यु के बाद शासक बना और गुलाम राजवंश की स्थापना की। वह एक महान निर्माता था जिसने दिल्ली में कुतुब मीनार के नाम से विख्यात आश्चर्यजनक 238 फीट ऊंचे पत्थर के स्तंभ का निर्माण कराया।

**खिलजी राजवंश**

बलवन की मौत के बाद सल्तनत कमजोर हो गई और यहां कई बगावतें हुईं। यही वह समय था जब राजाओं ने जलाल उद दीन खिलजी को राजगद्दी पर बिठाया। इससे खिलजी राजवंश की स्थापना आरंभ हुई। इस राजवंश का राजकाज 1290 ए.डी. में शुरू हुआ। अला उद दीन खिलजी जो जलाल उद दीन खिलजी का भतीजा था, ने षड़यंत्र किया और सुल्तान जलाल उद दीन को मार कर 1296 में स्वयं सुल्तान बन बैठा। अला उद दीन खिलजी प्रथम मुस्लिम शासक

* डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी मध्यकालीन एवं आधुनिक भारतीय इतिहास विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ

था जिसके राज्य ने पूरे भारत का लगभग सारा हिस्सा दक्षिण के सिरे तक शामिल था। उसने कई लड़ाइयां लड़ी, गुजरात, रणथम्भौर, चित्तौड़, मलवा और दक्षिण पर विजय पाई। उसके 20 वर्ष के शासन काल में कई बार मंगोलों ने देश पर आक्रमण किया किन्तु उन्हें सफलतापूर्वक पीछे खदेड़ दिया गया। इन आक्रमणों से अला उद दीन खिलजी ने स्वयं को तैयार रखने का सबक लिया और अपनी सशस्त्र सेनाओं को संपुष्ट तथा संगठित किया। वर्ष 1316 ए.डी. में अला उद दीन की मौत हो गई और उसकी मौत के साथ खिलजी राजवंश समाप्त हो गया।

**तुगलक वंश**

गयासुद्दीन तुगलक, जो अला उद दीन खिलजी के कार्यकाल में पंजाब का राज्यपाल था, 1320 ए.डी. में सिंहासन पर बैठा और तुगलक राजवंश की स्थापना की। उसने वारंगल पर विजय पाई और बंगाल में बगावत की। मुहम्मद बिन तुगलक ने अपने पिता का स्थान लिया और अपने राज्य को भारत से आगे मध्य एशिया तक आगे बढ़ाया। मंगोल ने तुगलक के शासन काल में भारत पर आक्रमण किया और उन्हें भी इस बार हराया गया। मुहम्मद बिन तुगलक ने अपनी राजधानी को दक्षिण में सबसे पहले दिल्ली से हटाकर देवगिरी में स्थापित किया। जबकि इसे दो वर्ष में वापस लाया गया। उसने एक बड़े साम्राज्य को विरासत में पाया था किन्तु वह कई प्रांतों को अपने नियंत्रण में नहीं रख सका, विशेष रूप से दक्षिण और बंगाल को। उसकी मौत 1351 ए.डी. में हुई और उसके चचेरे भाई फिरोज तुगलक ने उसका स्थान लिया।

**सय्यद वंश**

इसके बाद खिजार खान द्वारा सायीद राजवंश की स्थापना की गई। सायीद ने लगभग 1414 ए.डी. से 1450 ए.डी. तक शासन किया। खिजार खान ने लगभग 37 वर्ष तक राज्य किया। सायीद राजवंश में अंतिम मोहम्मद बिन फरीद थे। उनके कार्यकाल में भ्रम और बगावत की स्थितिबनी हुई। यह साम्राज्य उनकी मृत्यु के बाद 1451 ए.डी. में समाप्त हो गया।

**लोदी वंश**

बुहलोल खान लोदी (1451–1489 ई.) वे लोदी राजवंश के प्रथम राजा और संस्थापक थे। दिल्ली की सलतनत को उनकी पुरानी भव्यता में वापस लाने के लिए विचार से उन्होंने जौनपुर के शक्तिशाली राजवंश के साथ अनेक क्षेत्रों पर विजय पाई। बुहलुल खान ने ग्वालियर, जौनपुर और उत्तर प्रदेश में अपना क्षेत्र विस्तारित किया।

बुहलुल खान की मृत्यु के बाद उनके दूसरे पुत्र निजाम शाह राजा घोषित किए गए और 1489 में उन्हें सुल्तान सिकंदर शाह का खिताब दिया गया। उन्होंने अपने राज्य को मजबूत बनाने के सभी प्रयास किए और अपना राज्य पंजाब से बिहार तक विस्तारित किया। वे बहुत अच्छे प्रशासक और कलाओं तथा लिपि के संरक्षक थे। उनकी मृत्यु 1517 ए.डी. में हुई।

**विजयनगर साम्राज्य का उदय**

जब मुहम्मद तुगलक दक्षिण में अपनी शक्ति खो रहा था तब दो हिन्दु राजकुमार हरिहर और बूक्का ने कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के बीच 1336 में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। जल्दी ही उन्होंने उत्तर दिशा में कृष्णा नदी तथा दक्षिण में कावेरी नदी के बीच इस पूरे क्षेत्र पर राज्य स्थापित कर लिया। विजयनगर साम्राज्य की बढ़ती ताकत से इन कई शक्तियों के बीच टकराव हुआ और उन्होंने बहमनी साम्राज्य के साथ बार बार लड़ाइयां लड़ी।

विजयनगर साम्राज्य के सबसे प्रसिद्ध राजा कृष्ण देव राय थे। विजयनगर का राजवंश उनके कार्यकाल में भव्यता के शिखर पर पहुंच गया। वे उन सभी लड़ाइयों में सफल रहे जो उन्होंने लड़ी। उन्होंने ओडिशा के राजा को पराजित किया और विजयवाड़ा तथा राज महेन्द्री को जोड़ा। कृष्ण देव राय ने पश्चिमी देशों के साथ व्यापार को प्रोत्साहन दिया। उनके पुर्तगालियों के साथ अच्छे संबंध थे, जिनका व्यापार उन दिनों भारत के पश्चिमी तट पर व्यापारिक केन्द्रों के रूप

में स्थापित हो चुका था। वे न केवल एक महान योद्धा थे बल्कि वे कला के पारखी और अधिगम्यता के महान संरक्षक रहे।

**बहमनी राज्य**

बहमनी का मुस्लिम राज्य दक्षिण के महान व्यक्तियों द्वारा स्थापित किया गया, जिन्होंने सुल्तान मुहम्मद तुगलक की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध बकावत की। वर्ष 1347 में हसन अब्दुल मुजफ्फर अल उद्दीन बहमन शाह के नाम से राजा बना और उसने बहमनी राजवंश की स्थापना की। यह राजवंश लगभग 175 वर्ष तक चला और इसमें 18 शासक हुए। अपनी भव्यता की ऊंचाई पर बहमनी राज्य उत्तर में कृष्णा सें लेकर नर्मदा तक विस्तारित हुआ और बंगाल की खाड़ी के तट से लेकर पूर्व–पश्चिम दिशा में अरब सागर तक फैला। बहमनी के शासक कभी कभार पड़ोसी हिन्दू राज्य विजयनगर से युद्ध करते थे।

**सूफीवाद**

पद सूफी, वली, दरवेश और फकीर का उपयोग मुस्लिम संतों के लिए किया जाता है, जिन्होंने अपनी पूर्वाभासी शक्तियों के विकास हेतु वैराग्य अपनाकर, सम्पूर्णता की ओर जाकर, त्याग और आत्म अस्वीकार के माध्यम से प्रयास किया। बारहवीं शताब्दी ए.डी. तक, सूफीवाद इस्लामी सामाजिक जीवन के एक सार्वभौमिक पक्ष का प्रतीक बन गया, क्योंकि यह पूरे इस्लामिक समुदाय में अपना प्रभाव विस्तारित कर चुका था।

सूफीवाद ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में जडें जमा लीं और जन समूह पर गहरा सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक प्रभाव डाला। इसने हर प्रकार के धार्मिक औपचारिक वाद, रुढिवादिता, आडंबर और पाखंड के विरुद्ध आवाज उठाई तथा एक ऐसे वैश्विक वर्ग के सृजन का प्रयास किया जहां आध्यात्मिक पवित्रता ही एकमात्र और अंतिम लक्ष्य है।

**मुगल वंश**

पंद्रहवीं सदी के शुरुआत में मध्य एशिया में फरगना के राजकुमार जाहिरुद्दीन को निर्वासन भुगतना पड़ा। उसने कई साल गुमनामी में रहने का बाद अपनी सेना संगठित की और राजधानी समरकंद कर धावा बोला। इसी बीच उसकी सेना ने उससे विश्वासघात कर दिया और वो समरकंद तथा अपना ठिकाना दोनों खो बैठा। अब एकबार फिर उसे गुमनामी में रहना पड़ा। इसबार वो भागकर हिन्दुकूश पर्वत पारकर काबुल आ पहुँचा जहाँ इसके किसी रिश्तेदार ने उसको शरण दी और वो फारसी साम्राज्य का काबुल प्रान्त का अधिपति नियुक्त किया गया। यहीं से शुरु होती है बाबर की कहानी। जाहिरूद्दीन ही बाबर था जिसे मध्य एशिया में बाबर नाम से बुलाया जाता था क्योंकि उन अर्धसभ्य कबाईली लोगों को जाहिरुद्दीन का उच्चारण मुश्किल लगता था।

**सिक्ख शक्ति का उदय**

सिक्ख धर्म की स्थापना सोलहवीं शताब्दी के आरंभ में गुरूनानक देव द्वारा की गई थी। गुरू नानक का जन्म 15 अप्रैल 1469 को पश्चिमी पंजाब के एक गांव तलवंडी में हुआ था। एक बालक के रूप में उन्हें दुनियावी चीजों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। तेरह वर्ष की उम्र में उन्हें ज्ञान प्राप्ति हुई। इसके बाद उन्होंने देश के लगभग सभी भागों में यात्रा की और मक्का तथा बगदाद भी गए और अपना संदेश सभी को दिया। उनकी मृत्यु पर उन्हें 9 अन्य गुरूओं ने अपनाया।

**मुगल शासन काल का पतन**

मुगल शासन काल का विघटन 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद आरंभ हो गया था। उनके पुत्र और उत्तराधिकारी, बहादुर शाह जफर पहले ही बूढ़े हो गए थे, जब वे सिहांसन पर बैठे और उन्हें एक के बार एक बगावतों का सामना करना पड़ा। उस समय साम्राज्य के सामने मराठों और ब्रिटिश की ओर से चुनौतियां मिल रही थी। करो में स्फ्रीति और धार्मिक असहनशीलता के कारण मुगल शासन की पकड़ कमजोर हो गई थी। मुगल साम्राज्य अनेक स्वतंत्र या अर्ध स्वतंत्र राज्यों में टूट गया।

### मराठों का उत्कर्ष

जिस समय बहमनी सल्तनत का पतन हो रहा था उस समय मुगल साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष पर था–विशाल साम्राज्य, बगावतों से दूर और विलासिता में डूबा हुआ। उस समय शाहजहाँ का शासन था और शहजादा औरंगजेब उसका दक्कन का सूबेदार था। बहमनी के सबसे शक्तिशाली परवर्ती राज्यों में बीजापुर तथा गोलकुण्डा के राज्य थे। बीजापुर के कई सूबेदारों में से एक थे शाहजी। शाहजी एक मराठा थे और पुणे और उसके दक्षिण के इलाकों के सूबेदार। शाहजी की दूसरी पत्नी जीजाबाई से उनके पुत्र थे शिवाजी।

अपने जीवन के आखिरी दिनों में शिवाजी ने अपना ध्यान दक्षिण की ओर लगाया और मैसूर को अपने साम्राज्य में मिला लिया। १६८० में उनकी मृत्यु के समय तक मराठा साम्राज्य एक स्थापित राज के रूप में उभर चुका था और कृष्णा से कावेरी नदी के बीच के इलाकों में उनका वर्चस्व स्थापित हो चुका था। शिवाजी के बाद उनके पुत्र सम्भाजी (शम्भाजी) ने मराठों का नेतृत्व किया। आरंभ में तो वे सफल रहे पर बाद में उन्हें मुगलों से हार का मुँह देखना पड़ा। औरंगजेब ने उन्हें पकड़कर कैद कर दिया। कैद में औरंगजेब ने शम्भाजी से मुगल दरबार के उन बागियों का नाम पता करने की कोशिश की जो मुगलों के खिलाफ विश्वासघात कर रहे थे। इसकारण उन्हें यातनाए दी गई और अन्त में तंग आकर उन्होंने औरंगजेब को भला बुरा कहा और संदेश भिजवाया कि वे औरंगजेब की बेटी से शादी करना चाहते हैं। उनकी भाषा और संदेश से क्षुब्ध होकर औरंगजेब ने शम्भाजी को टुकड़े टुकड़े काटकर उनके मांस को कुत्तों को खिलाने का आदेश दे दिया।

### संदर्भ ग्रंथ सूची

मुगलकालीन सगुण भक्ति काव्य का सांस्कृतिक विष्लेषण डॉ. रतनचन्द्र शर्मा जयपुर पुस्तक सदन, चौड़ा रास्ता, जयपुर–302003

आर. पी. त्रिपाठी, राइज एंड फाल ऑफ दी मुगल एम्पायर

एनालिटिकल फिलासोफी ऑफ हिस्ट्री, कैम्ब्रिज, 1965

रिचर्ड, प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म, उद्धृत राउज

ब्रिटिश संग्रहालय से मुगल भारत का एक संवादात्मक अनुभव

बू हलीमा का बाग और मकबरे का शिलालेख

ए मुगल स्प्लेंडर रीगेन्ड द्वाराμसीलिया डब्ल्यु डगर, न्यू यॉर्क टाइम्स, 29 सितंबर 2002

खासमखास होंगे दिल्ली के खास धरोहर। देशबन्धु। 13 फरवरी 2010

जर्नल ऑफ द ए"ियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता।

जोनल ऑफ बिहार एंड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी पटना।

जर्नल ऑफ द बम्बई ब्रांच ऑफ रायल ए"ियाटिक सोसाइटी, बम्बई।

प्रा0 भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, ओम प्रका"ा, नई दिल्ली, 1994।

प्रा0 भारतीय सामाजिक एवं आर्थिक संस्थाएं, कैला"ाचन्द्र जैन, भोपाल 1987।